

## मंजूर एहतेशाम की कहानियों में मध्यवर्गीय समाज में पारिवारिक विघटन

शमीम पी

शोधार्थी/सहायक आचार्य

हिंदी विभाग, यूनिवर्सिटी कॉलेज तिरुवनंतपुरम, केरल - 695304 मो: 7356108164

परिवार मानव समाज की प्राचीनतम एवं महत्वपूर्ण संस्था है। परिवार सामाजिक जीवन की मूलभूत इकाई है। आज पारिवारिक संबंधों में अलगाव या बिखराव परिलक्षित होता है। आज परिवार, संयुक्त परिवार से टूटकर पति-पत्नी व बच्चों तक ही सीमित रह गया है। उसमें माता-पिता, वृद्धों व भाई-बहनों के लिए कोई स्थान नहीं रहा है। आज प्रत्येक व्यक्ति आज इतना व्यस्त हो गया है कि वह स्वतंत्र रहना चाहता है। परंपरागत पारिवारिक मूल्यों में विघटन आने का एक कारण व्यक्ति स्वातंत्र्य की भावना है अर्थात् आज का व्यक्ति पारिवारिक संबंधों से दूर रहना चाहता है। आधुनिक युग में आज हमारा समाज राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जड़ों से इतना जकड़ गया है, भौतिक सुखों की ओर भागने वाली हमारी मनोवृत्ति इतनी तुच्छ हो चुकी है और इन सब कारणों से हमारे पारिवारिक संबंधों में जो तनाव आ गया है, उसने एक गंभीर सामाजिक सांस्कृतिक संकट का रूप ले लिया है। हमारी आवश्यकताएँ इतनी बढ़ गई हैं कि यांत्रिक सभ्यता के दबाव ने हमारे तमाम नैतिक मूल्यों को तहस-नहस कर दिया है। शहरीकरण की दौड़, आर्थिक अभाव, बेरोजगारी, समय की कमी, ने पति-पत्नी के मध्य आपसी प्रेम, विश्वास एवं सहयोग की भावना पर भी प्रहार किया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि परिवार निरंतर विघटन की ओर प्रवृत्त हो रहे हैं। संयुक्त परिवार एकल परिवार में परिणत हो रहे हैं, क्योंकि बच्चों पर मां-बाप का अनुशासन अथवा नियंत्रण नहीं रह गया है।

मंजूर एहतेशाम जी ने अपनी कहानियों में मध्यवर्गीय पारिवारिक संबंधों में आ रहे बिखराव या अलगाव को दिखाया है। वर्तमान युग ने अनेक जीवन मूल्यों के विघटन के बाद जो एक नया मूल्य दिया है, वह है संबंधहीनता। इस संबंधहीनता में आधुनिक युग का जटिल व भौतिक जीवन केंद्रित है। इन स्थितियों में व्यक्ति निरंतर अकेला रहता है। यह संबंध चाहे पति-पत्नी के हों मां-बेटीया भाई-बहन अथवा मानव-मानव का। वर्तमान व्यवस्था ने भी व्यक्ति को इतना तोड़ दिया है कि परिवार में बिखराव उत्पन्न हो गया है।

‘पुल-पुख्ता’ कहानी में पुल के टूटने पर परिवार की स्त्रियां सुरक्षित स्थान पर भेज दी जाती है, जबकि पुरुष वहीं रह जाते हैं। नायक के मन में उठने वाले विचार रिश्ते की कमजोरियों की ओर प्रकाश डालते हैं- ‘मेरी बीवी तो ठीक है शायद हुए अभी छः महीने हि हुए हैं, लेकिन भाभी? अम्मा? क्या पचास साल साथ रहने के बाद आदमी को इस तरह अकेले छोड़ कर जाया जा सकता है? अम्मा यूँ अब्बा को छोड़कर जा सकती है? और भाभी? रिश्ता, खून यह सब उसी पुल से कमजोर है, जो सालों से हमारे पीछे पानी को रोके खड़ा है? क्या हम तीनों भाई भी सिर्फ अब्बा की मोहब्बत में ही यहाँ रुके हैं?’<sup>1</sup> पारिवारिक संबंधों में यही बिखराव ‘छोटी-छोटी चीजें’ कहानी में भी दिखाई देती है ‘मैंने शराब छोड़ दी थी, सिगरेट पीना भी बंद कर दिया था। बाप बनने का अहसास... हॉस्पिटल... दवाएँ... दूध...। मुझे बीवी और बच्चे के लिए कुछ भी करना बहुत अच्छा लगता था। उधार- लेकर भी। मैंने कुछ ट्यूशंस कर लीं..... सब पैसे हाथ से मुंह तक आने में ही खत्म हो जाते थे... धीरे-धीरे शो केसों में जमे खिलौने, अच्छे कपड़े पहने औरतें और ऊंची बिल्डिंगों पर चमकती रोशनियाँ मुझे थकाने लगीं... जब हम दोनों इकट्ठे होते तो ही चीजें मेरे आस-पास एक जाल बुन देती.... मैं रात-रात भर पड़ा जागता रहता... वह मेरी बीवी

लेकिन उसे छूने के ख्याल से ही मेरे हाथ कट जाते.....’<sup>2</sup> पति-पत्नी के मध्य आई दूरियां जिनके कारण कहीं इसी समाज की अर्थव्यवस्था में पनपता है। ‘धीरे-धीरे वह मुझे कैसी नजरों से देखने लगी... कैसे-कैसे जलाने लगी... कहती मैं मरियम न हुई तो क्या हमारा मुन्ना तो मसीहा है! यही नाम रखा जाए क्यों...!’<sup>3</sup>

परिवार का टूटना, प्रेम, प्यार, रिश्ते का खत्म होना भी इसी समाज का एक हिस्सा है। आर्थिक अभाव जहां हमारे समाज में अनेक समस्याओं को जन्म देते हैं वहीं पारिवारिक कलह भी इसी अभाव की देन है। संज अपनी पत्नी की आर्थिक जरूरत को पूरा नहीं कर पाता और मन की बड़ास अपनी पत्नी पर निकालता है- जिंदगी में पहली बार मैंने उसे मारा! पर चुपचाप पिटती रही मैं चीखता रहा, गालियां देता रहा, मारता रहा। वह एक शब्द नहीं बोली। फिर उसे रात में मेरे पास आए। मुन्ने को मेरे पास लिटाया और कहा कि वह जा रही है। मैं देखता रह गया।<sup>4</sup> यही संबंधहीनता मानसिक स्तर पर आज हर व्यक्ति अपने भीतर छुपाए हुए हैं - तुम्हारा प्रेम तो आदर्श भी नहीं कहा जा सकता है। तुम तो कितनी ही बार जब अपनी पत्नी के साथ होते हो तभी इस की कल्पना करते हो।<sup>5</sup>

मंजूर एहतेशाम की कहानी ‘रमजान में मौत’ के अंतर्गत भी यही संबंधहीनता प्रमुख भाव के रूप में उभर आई है। असद मियां जो अपने परिवार में ही बेगानों की तरह रह गए हैं। रमजान के दिन में उनकी हालत नाजुक है। लेकिन परिवार वालों को चिंता है कि ईद कैसे मनाई जाए। बिमारी की हालत में असद मियां पैथिडीन से ले लेकर खुद को जिंदा रखे हैं। घर के दूसरे लोगों के लिए यह मात्र एक तमाशा है, दिखावा है। तमाशाबजी है! निरी एक्टिंग और सारे मर्जों की एक ही दवा है- पैथिडीन।<sup>6</sup>

असद मियां की हालत बद से बेद तर होती जाती है। डॉक्टर से दिखाने के नाम पर रिश्तेदार उन्हें ऐसे ही छोड़ देते हैं। उनकी बीवी को अपने मेकअप और बाजार से फुर्सत नहीं। यहां तक की असद मियां जी चादर पर लेटते हैं, उसे गंदा हुआ देखकर उसकी पत्नी सुहेला उसे पर व्यंग्य करते हुए कहती है- “अगर खुद साफ नहीं रह सकते तो दूसरों को तो चैन से मरने दें। खुद के पलंग पर नहीं लेते सारी चादर का सत्यानाश कर दिया!”<sup>7</sup> भारतीय समाज में शादी को व्यक्ति के पारिवारिक कल्याण के निमित्त संपन्न होने वाला एक संस्कार माना जाता है। जिससे उसके सामाजिक तथा धार्मिक कर्तव्य की पूर्ति होती है। धीरे-धीरे लोग इसे सामाजिक समझौता मानने लगे हैं। जिसमें व्यक्ति मुख्यतः व्यक्तिगत हित एवं सुख सुविधाओं के लिए संगठित होते हैं। लेकिन सच यही तक नहीं है। विवाह मात्र सामाजिक एवं आर्थिक कारणों से आवश्यक नहीं है, प्रत्युत अनेक भावात्मक एवं दैहिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी उस से होती है। यह वह सूत्र है जिसमें बंधकर एक दम्पति परिवार का निर्माण करते हैं।

घेरा कहानी में विवाह को एक नए रूप में दर्शाने का प्रयास किया गया है। एक सामाजिक समझौता है। जिसमें बंधकर शब्बो पूर्ण स्वतंत्र है और उसे मुक्त होकर शब्बो की मां बंधनग्रस्त है। शब्बो की अम्मा को अबू ने तलाक दे दिया और शाही खानदान की एक लड़की से निकाह कर लिया। वही अम्मा ने तलाक के बाद बगैर शादी के किसी कुंवर

साहब के साथ रहना शुरू कर दिया था। यहां लेखक ने तालाब के नाम पर टूटे परिवारों और दूसरी तरफ उसे टूटन से होने वाले दुष्प्रभाव का वर्णन किया है। जब शादी जैसे पवित्र रिश्ते को तलाक के नाम पर इतनी आसानी से तोड़ा जा सकता है। तो शादी करने का ढोंग क्यों किया जाए। इसलिए शब्बो की अम्मी इस समझौते को स्वीकार नहीं करती, और कुंवर साहब के साथ बिना विवाह के ही रहने लगती है, और कुंवर साहब के मरने पर किसी और के साथ रहने लगी- “इधर कुछ दिनों बाद कुंवर साहब तो मर गए लेकिन अम्मा उनके सोग में चूड़ियां तोड़े वैसे ही बेठी न रही थोड़ी ही दिनों में उन्हें फिर कोई चाहने वाला मिल गया”<sup>8</sup> अम्मा के इस विरोध का, विद्रोह का असर शब्बो की जिंदगी पर पड़ता है। सौतेली मां की पांच लड़कियों से अलग व्यवहार उसके साथ किया जाता है क्योंकि शादी को अस्वीकार करके शब्बो की अम्मी ने समाज को अस्वीकार किया था। विवाह जैसी पवित्र रिश्ते भी आज सिर्फ सुख व सुविधा की पूर्ति के लिए और आर्थिक लाभ के लिए, व दिखावे के लिए एक संस्था के रूप में चल रहा है। लेखक के शब्दों में- “उसने शादी जिस इज्जत और आसानियों के लिए की थी वह आज उसकी है। इस जायदाद और रुतबे की एक सीढ़ी के अलावा रहीम साहब का उसके जीवन में कोई महत्व न था, न है”<sup>9</sup>

मंजूर एहतेशामजी ने अपनी कहानियों में दहेज प्रथा के विकराल रूप को भी दिखाया है और उसके माध्यम से भी मानवीय संबंधों में होने वाले बिखराव को प्रदर्शित किया है। तमाशा कहानी में मंजूर जी ने दहेज प्रथा की समस्या को भी पर चित्रित किया है। विवाह सिर्फ एक मजबूरी या जिम्मेदारी को पूर्ति करने के लिए एक साधन बन गया है क्योंकि दहेज न होने के कारण सकीना आपा अपनी बेटी का विवाह पैंतीस-चालीस साल बड़े शहंशाह के साथ करती है और दहेज कम मिलने के कारण वह हमेशा प्रताड़ित की जाती थी। इस प्रथा के कारण बेमेल विवाह को बढ़ावा मिला है क्योंकि धन के अभाव में मा-बाप अपनी लड़की का विवाह एक अयोग्य और उम्र में बड़े व्यक्ति के साथ करने के लिए बाध्य हो जाता है।

आज व्यक्ति अपने आप तक सीमित हो गया है। बढ़ते जीवन संघर्षों ने आज परिवार को रस हीन बना दिया है। विशेष रूप से हमारी नई पीढ़ियां अपने घर परिवार के प्रति उदास है और एक दूसरे से कट कर रहते हैं। आज हमारे युवा पीढ़ी अनेक बुराइयों से ग्रस्त हो चुकी है। चोरी करना, शराब पीना, जुआ खेलने, धूम्रपान करना, ड्रग आदि का सेवन करना। मंजूर जी ने अपनी कहानियों में आज की युवा पीढ़ी के भटकाव को दिखाया है। “रमजान में मौत” कहानी में आज की युवा पीढ़ी को असद मियां के माध्यम से बताया है असद मियां का बेटा जमील चोरी करना, जुआ खेलने, सट्टे लगाना आदि बुरी संगतियों में पड़ गया है। असद मियां को जमील के चोरी का पता लग जाता है। लेकिन वह उसे कुछ भी नहीं कहता है नसरीन भी अपने मार्ग से भटक चुकी है और अनेक बुरे लड़कों के साथ खुली जीपों में घूमती है। लेखक ने आज की युवा पीढ़ी के भटकाव को इस प्रकार प्रस्तुत किया है।

जमील चोरी के अलावा अब सट्टे से भी शौक की करने लगे हैं। इधर भाभी की हरकतें देखो, नसरीन भी उन्हीं के रास्ते पर चल रही है। पता नहीं किन-किन हरामजादों के साथ खुली हुई जीप में घूमती-फिरती है। यही सब दोनों छोटी बेटियां भी करेंगी।<sup>10</sup>

एक पारंपरिक समस्या प्रधान कहानी में भी आज की युवा पीढ़ी के भटकाव का वर्णन किया गया है। खान साहब के दोनों बेटे कोई काम धंधा नहीं करते हैं। वह अपने मार्ग से भटक गए हैं। खान साहब ने आदेश देता है कि या तो वह कोई काम धंधा करें वरना उनके घर में कोई जगह नहीं है एक दिन खान साहब के बेटे अल्लाह वाले पर उनके खुद बहनोई

ने चोरी का इल्जाम लगा दिया। इस प्रकार युवा पीढ़ी के भटकने से भी पारिवारिक संबंधों में दरार पैदा कर दी है।

युवा पीढ़ी के चिंतन के अनुसार पुरातन मूल्य उनका विकास अवरुद्ध कर रहे हैं। धीरे-धीरे संपूर्ण व्यवस्था के प्रति उनके मन में विद्रोह भर जाता है। माता-पिता अपने युग के निरर्थक मूल्य से उन्हें आज भी चिपकाए रखना चाहते हैं। युवा वर्ग में इसलिए मूल्य के प्रति एक निस्संगता उत्पन्न हो गई है। क्योंकि उन्हें जीवन में मूल्य की कोई सार्थक उपयोगिता नहीं दिखाई देती। धन या अर्थ जीवन का सबसे बड़ा मूल्य बन चुका है युवा वर्ग से अच्छी तरह समझ चुका है। इसीलिए नई पीढ़ी में दक्कियानूसी विचारों के प्रति असंतोष, समाज के प्रति, सामाजिक मान्यता और परंपराओं के प्रति असंतोष है। मंजूर एहतेशामजी ने पुरातन और नवीनता के मध्य संघर्ष को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। “तस्बीह” कहानी पुरातन और नवीनता के मध्य संघर्ष की कहानी है। पुराने को न छोड़ने की चाह और नए को पाने की इच्छा दो ख्याल इस कहानी की कथावस्तु को समेटे हुए हैं। इस कहानी का मुख्य पात्र जो कि मुस्लिम मध्यमवर्ग से संबंध है, वह रीति रिवाज धर्म-कर्म को जबरदस्ती लादा गया बोझ मानता है। त्योहारों में होने वाले खर्च घर की जरूरतों और अन्य परेशानियां सब मिलकर उसे विरोधी बना देती है। नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी की मान्यताओं का खंडन करती है। कथानायक की अम्मा धार्मिक ख्यालात की महिला है, और उनकी पत्नी साझेदारी उन्हीं के समान धर्म-कर्म में विश्वास करने वाली महिला है। अम्मा जी को रमजान में जकात बाँटने के लिए पैसे की जरूरत है इस पर बेटा कहता है – “अम्मा जी को यह नजर नहीं आता की पाँच साल से घर की दीवारें कलई को तरस रही है। घर मकबरा लगने लगा है। पैसा हो तो मैं यह जरूरी काम ना कराऊं। नई पीढ़ी के अनुसार धर्म-कर्म आदमी अपनी इच्छा से नहीं करता बल्कि मजबूरी से करता है। वह धार्मिक कर्मकांड को समाज के द्वारा लादा गया बोझ समझता है और इसका तिरस्कार करता है”<sup>11</sup>

**निष्कर्षतः** हम यह कह सकते हैं कि मंजूर एहतेशामजी ने अपनी कहानियों के माध्यम से मध्यवर्गीय समाज में अनमेल विवाह, नैतिकता के पतन, युवा पीढ़ी का भटकाव, आर्थिक समस्याओं, दहेज प्रथा, भौतिक सुखों की तलाश एवं पुरातन व नवीनता के मध्यसंघर्ष के कारण विघटित होते परिवारोंका सशक्त चित्रण किया है।

\*\*\*\*\*

#### संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मंजूर एहतेशाम, संपूर्ण कहानियाँ, पृष्ठ संख्या: 42
2. वही, पृ. सं.: 32
3. वही, पृ. सं.: 33
4. वही, पृ. सं.: 33
5. वही, पृ. सं.: 112
6. वही, पृ. सं.: 11
7. वही, पृ. सं.: 9
8. वही, पृ. सं.: 12
9. वही, पृ. सं.: 17
10. वही, पृ. सं.: 13
11. वही, पृ. सं.: 286